आई एस एस एन 0971-9873

आई सी एम आर पत्रिका

वर्ष-27, अंक-10

अक्टूबर 2013

इस अंक में

- जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए वैज्ञानिकों को आई सी एम आर पुरस्कार 93
- जापानी मस्तिष्कशोथ (जैपनीज़ एनसिफैलाइटिस, JE) के विरुद्ध एक पूर्ण स्वदेशी वैक्सीन राष्ट्र को समर्पित 97
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह : शपथ ग्रहण 98
- व्याख्यान : बदलते विश्व में अवसाद की चुनौतियां 98
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार 99
- भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन 103

संपादक मंडल

अध्यक्ष — डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, भारत सरकार, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद

प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग — डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव

संपादक — डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय, डॉ रजनी कान्त

प्रकाशक — श्री जगदीश नारायण माथुर

जैवआयुर्विज्ञान के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए वैज्ञानिकों को आई सी एम आर पुरस्कार

भारतीय आयुर्विज्ञान आनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) द्वारा दिनांक 24 सितम्बर, 2013 को नई दिल्ली स्थित इंडिया हैबीटेट सेंटर में आई सी एम आर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद की उपस्थिति ने इस समारोह की शोभा बढ़ाई। माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री ए.एच. खान चौधरी गणमान्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस अवसर पर भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के सचिव श्री के. एन. देसीराजू, आयुष विभाग के सचिव श्री नीलांजन सान्याल, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के महानिदेशक श्री जगदीश प्रसाद और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव डॉ विश्व मोहन कटोच भी मंचासीन थे। इनके अलावा इस समारोह में वर्ष 2009

मंचासीन बायें से डॉ के. के. सिंह,प्रमुख, मानव संसाधन प्रभाग; डॉ नीलांजन सान्याल, सचिव, आयुष विभाग; श्री ए.एच.खान चौधरी, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री; श्री गुलाम नबी आज़ाद, माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री; डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर; श्री के. एन. देसीराजू, सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग तथा डॉ जगदीश प्रसाद, महानिदेशक, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय

और 2010 के लिए आई सी एम आर के विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत वैज्ञानिकगण, आमंत्रित अतिथिगण, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारीगण, आई सी एम आर के संस्थानों के निदेशक, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सदस्यों, आई सी एम आर के वरिष्ठ

उपमहानिदेशक (प्रशासन) श्री टी.एस. जवाहर, वरिष्ठ वित्तीय सलाहकार श्री धरित्री पण्डा के साथ-साथ वैज्ञानिकों, कर्मचारियों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद के कर कमलों द्वारा आई सी एम आर के विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत कुल 50 वैज्ञानिकों (वर्ष 2009 के लिए 19 और वर्ष 2010 के लिए 31) को पुरस्कार/पारितोषिक, प्रमाण पत्र एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद, माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री ए.एच.

दीप प्रज्ज्वलित करते हुए माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद

खान चौधरी, मंचासीन सम्मानित अतिथिगण का पुष्पगुच्छ से स्वागत के पश्चात सरस्वती वन्दना सम्पन्न हुई। सर्वप्रथम, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव और आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने माननीय मंत्री महोदय, मंचासीन अतिथिगण, पुरस्कार विजेताओं, सभागार में

सम्बोधित करते हुए डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर

उपस्थित सभी अतिथिगण का स्वागत करते हुए आई सी एम आर के पुरस्कारों के विषय में संक्षिप्त जानकारी प्रदान की और सभी विजेताओं को बधाई दी।

इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्री ए.एच.खान चौधरी ने सभी पुरस्कार विजेताओं को उनके उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य के लिए बधाई दी। उन्होंने आई सी एम आर द्वारा संपन्न कार्यों की सराहना की और कहा कि युवा शोधकर्ताओं को प्रेरित करने की दिशा में बहुत कार्य करने हैं परन्तु हमें ऐसे क्षेत्रों में अधिक अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के साथ कार्य करने की आवश्यकता है जो पूर्ण रूप

सम्बोधित करते हुए माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री श्री ए.एच. खान चौधरी

से विकसित नहीं है। माननीय राज्य मंत्री ने आशा व्यक्त की कि इन कार्यक्रमों से वैज्ञानिक और शिक्षकगण अनुसंधान के क्षेत्र में विश्व स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धाशील बन सकेंगे।

इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद ने इन पुरस्कार विजेताओं में महिला वैज्ञानिकों की संख्या अच्छी होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने वैज्ञानिकों के शोध कार्यों की सराहना करते हुए बताया कि भारत द्वारा स्वास्थ्य क्षेत्र में उत्कृष्ट मानव संसाधन तैयार किए जा रहे हैं। भारत द्वारा न केवल अपने देश की आवश्यकताओं के लिए बल्कि अनेक अन्य देशों के लिए भी मानव संसाधन तैयार किए जा रहे हैं। माननीय मंत्री महोदय ने बताया कि हाल ही में दिल्ली में विश्व स्वास्थ्य संगठन के दक्षिण पूर्व एशिया के क्षेत्रीय कार्यालय (SEARO) में सम्पन्न बैठक में विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक डॉ मार्गरेट चैन ने स्वास्थ्य

सम्बोधित करते हुए माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद

मंत्रालय द्वारा संचालित कार्यक्रमों की प्रशंसा की है। उन्होंने बताया कि भारत द्वारा तैयार बड़ी संख्या में मानव संसाधन अन्य देशों में कार्यरत हैं। संयुक्त राज्य अमरीका में कार्यरत 81,000 से अधिक तथा ब्रिटेन में 75,000 से अधिक चिकित्सक, विशेषज्ञ/विशिष्ट विशेषज्ञ भारतीय मूल के हैं।

माननीय मंत्री महोदय ने बताया कि स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डी एच आर) ने इंफ्रास्ट्रक्चर (मूलभूत ढांचा) और मानव संसाधन दोनों

के संदर्भ में शोधकार्य को विस्तारित करने की दिशा में अनेक नवाचारी योजनाओं की शुरुआत की है। उन्होंने व्यक्त किया कि डी एच आर ने इसी वर्ष तीन नई योजनाओं की शुरुआत की है। इनका उद्देश्य असंचारी रोगों का मुकाबला करने के लिए मेडिकल कॉलेजों को सुदृढ़ बनाने हेतु बहुविषयक शोध इकाइयों की स्थापना करना; सभी शासकीय मेडिकल कॉलेजों और राष्ट्रीय संस्थानों में विषाणुविज्ञान प्रयोगशालाओं के एक नेटवर्क की स्थापना करना; तथा मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाइयों की स्थापना जिसके अन्तर्गत आई सी एम आर के संस्थान, राज्य के मेडिकल कॉलेज और राज्य के स्वास्थ्य विभाग मिलकर कार्य करेंगे और ग्रामीण आबादी को आधुनिकतम प्रौद्योगिकी को हस्तांतरित करेंगे।

इन योजनाओं के अंतर्गत हुई प्रगति का उल्लेख करते हुए माननीय श्री आज़ाद महोदय ने बताया कि इस वर्ष के दौरान 35 शासकीय मेडिकल कॉलेजों में बहुविषयक शोध इकाइयां स्थापित की जाएंगी जिनमें 21 के लिए मंजूरी प्राप्त हो गई है। उन्होंने बताया कि विगत तीन वर्षों के दौरान विषाणुज रोगों और क्षयरोग पर शोधकार्य करने के लिए 16 नई बायो-सेफ्टी प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं और भारत में अब ऐसी प्रयोगशालाओं की संख्या 20 से अधिक हो गई है। प्रकोपों और अन्य गंभीर विषाणुज रोगों पर नियंत्रण रखने हेतु 160 शासकीय मेडिकल कॉलेजों में विषाणुज रोगों के निदान और उन पर अनुसंधान के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर निर्मित किए जाएंगे अथवा उन्हें सुदृढ़ किया जाएगा। डी एच आर द्वारा पांच मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाइयों को मंजूरी प्राप्त हो गई है। उन्होंने बताया कि विगत वर्ष आई सी एम आर के पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान में एक BSL-IV प्रयोगशाला स्थापित की गई जो रक्तस्रावी ज्वरों और जैवआतंकवाद में प्रयुक्त कारकों जैसे अत्यन्त खतरनाक घातक संक्रमणों से निपटने लिए एशिया की प्रथम सक्रिय प्रयोगशाला है।

श्री आज़ाद ने कैंसर और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार द्वारा संपन्न कार्यों पर बल दिया। केन्द्रीय सरकार ने देश भर में 20 नवीन राज्य कैंसर संस्थानों, 23 नवीन तृतीयक (टर्शियरी) कैंसर केन्द्रों को स्थापित करने तथा मौजूदा 27 क्षेत्रीय कैंसर सुरक्षा केन्द्रों को सुदृढ़ बनाने के लिए फण्ड की मंजूरी प्रदान की है।

इस अवसर पर माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री महोदय के कर कमलों से आई सी एम आर के विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत वैज्ञानिकों को पुरस्कार एवं पारितोषिक प्रदान किए गए।

पुरस्कार वितरण के पश्चात इस कार्यक्रम के समन्वयक आई सी एम आर मुख्यालय में वैज्ञानिक 'जी' डॉ के.के. सिंह ने इस कार्यक्रम में उपस्थित होने के लिए माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद, स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री ए.एच.खान चौधरी, सहित अन्य सभी गणमान्य अतिथियों, पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं, आमंत्रित सभी अतिथियों, मीडिया के सदस्यों को धन्यवाद व्यक्त किया। उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन में कुशल मार्ग दर्शन और प्रेरणा देने के लिए स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव और आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच, वरिष्ठ

पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं के साथ ग्रुप फोटोग्राफ

उपमहानिदेशक श्री टी.एस.जवाहर तथा आई सी एम आर की वरिष्ठ वित्तीय सलाहकार श्रीमती धरित्री पण्डा को धन्यवाद दिया। डॉ सिंह ने इस कार्यक्रम की तैयारी से जुड़े आई सी एम आर के सभी अधिकारियों,

दर्शक दीर्घा का दृश्य

वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को महत्वपूर्ण सहयोग के लिए धन्यवाद दिया।

अंत में सभागार में राष्ट्रगान के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद के कर कमलों से पुरस्कार एवं पारितोषिक प्राप्त करते हुए पुरस्कृत वैज्ञानिकगण

जापानी मस्तिष्कशोथ (जैपनीज़ एनसिफैलाइटिस, JE) के विरुद्ध एक पूर्ण स्वदेशी वैक्सीन राष्ट्र को समर्पित

आई सी एम आर के पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान और हैदराबाद स्थित भारत बायोटेक के संयुक्त प्रयासों के परिणामस्वरूप जापानी मस्तिष्कशोथ यानि जैपनीज़ एनसिफैलाइटिस (JE) के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करने वाला एक पूर्ण स्वदेशी टीका (वैक्सीन) विकसित किया गया। नई दिल्ली स्थित होटल आबेरॉय में आयोजित एक कार्यक्रम में माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद ने 'जेनवैक' नामक इस वैक्सीन का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के सचिव डॉ के. एन. देसीराजू, आयुष विभाग के सचिव डॉ नीलांजन सान्याल, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय के महानिदेशक डॉ जगदीश प्रसाद, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ वी.एम. कटोच, आदि जैसे गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद ने कहा कि यह देश के लिए एक मील का पत्थर है। अभी तक यह वैक्सीन चीन से आयात की जा रही है। हालांकि, जापानी मस्तिष्कशोथ से सामान्यतया 15 वर्ष से कम आयु के बच्चे प्रभावित होते हैं परन्तु हाल के दिनों में असम में वयस्कों के भी इसकी चपेट में आने की घटनाएं प्रकाश में आई हैं। विश्व में प्रति वर्ष 50,000 रोगी JE की चपेट में आते हैं जिनमें 15,000 मौतें होती हैं। एक रोगी को इस वैक्सीन की दो खुराकों की आवश्यकता पड़ेगी जिससे तीन वर्ष तक सुरक्षा प्राप्त होगी। माननीय मंत्री महोदय ने बताया कि केन्द्रीय कैबिनेट द्वारा जापानी मस्तिष्कशोथ (JE) और तीव्र मस्तिष्कशोथ संलक्षण (AES) के निवारण और नियंत्रण हेतु एक राष्ट्रीय कार्यक्रम को मंजूरी प्रदान की गई है। अब यह कार्यक्रम संबद्ध मंत्रालयों द्वारा 5 वर्षों की अवधि (2012-13 से 2016-17) के लिए देश के 60 प्राथमिकता वाले जिलों में लागू किया जा रहा है। इंटरवेंशन कार्यक्रम मुख्यतया असम, बिहार, तमिल नाडु, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल नामक 5 राज्यों में केन्द्रित किए जा रहे हैं।

जेनवैक वैक्सीन के रिलीज के अवसर पर बाएं से डॉ विश्व मोहन कटोच, सचिव, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग एवं महानिदेशक, आई सी एम आर; श्री गुलाम नबी आजाद, माननीय केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री; डॉ कृष्णा एम. एल्ला, प्रबंध निदेशक, भारत बायोटेक; डॉ जगदीश प्रसाद, महानिदेशक, स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय

माननीय मंत्री महोदय ने इस वैक्सीन के उत्पादन हेतु डी एच आर के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ कटोच के नेतृत्व की सराहना की तथा राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों विशेषतया डॉ डी.टी. मौर्य और डॉ मिलिन्द गोरे को बधाई दी। इनके अलावा माननीय मंत्री महोदय ने इस वैक्सीन के निर्माण के लिए भारत बायोटेक को बधाई दी।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और भारत बायोटेक के बीच प्राइवेट-पब्लिक पार्टनरशिप के अंतर्गत विकसित यह वैक्सीन वर्ष 1980 के दशक के पूर्वार्द्ध में कोलार से प्राप्त JE विषाणु के एक उपभेद से तैयार की गई है। यह वैक्सीन भारत में सामान्य रूप पाए जाने वाले JE के उपभेद (टाइप-3) के साथ-साथ इसके एक उभरते उपभेद (टाइप-1) के विरुद्ध प्रभावी पाई गई है। भारत बायोटेक के प्रबंध निदेशक डॉ कृष्णा एम. एल्ला के अनुसार इस वैक्सीन की एकल खुराक से 96 प्रतिशत तक तथा इसकी दो खुराकों से 98 प्रतिशत तक सुरक्षा मिलती है।

भारत के 19 राज्य, जिनमें सर्वाधिक आबादी वाले उत्तर प्रदेश और बिहार राज्य सम्मिलित हैं, में जापानी मस्तिष्कशोथ से प्रभावित हैं। मच्छरों द्वारा सूकरों से मानवों में संचरित होने वाले इस विषाणु से प्रत्येक वर्ष बड़ी संख्या में कुपोषित बच्चे मौत का शिकार बनते हैं। वर्ष 1955 में तमिल नाडु में विषाणु की शुरुआत की रिपोर्ट मिलने के पश्चात अब यह JE विषाणु देश के 19 राज्यों के 171 जिलों में फैल गया है।

भारत में इस रोग की पहली बार पहचान वर्ष 1955 में वेल्लोर स्थित क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भरती रोगियों में की गई। तमिल नाडु के उत्तर अरकॉट और आंध्र प्रदेश के समीपस्थ जिलों से आए इन रोगियों की सीरमविज्ञानी जांच के परिणामस्वरूप इसकी पहचान जापानी मस्तिष्कशोथ के रूप में की गई। इस रोग में अचानक तेज बुख़ार आने, सिरदर्द होने, व्यवहार में बदलाव आने, अंगघात, बेहोशी होने और यहां तक कोमा में चले जाने जैसी स्थितियां होती हैं।

इस अवसर पर स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा इस क्षेत्र में शोधकार्य करने और प्रौद्योगिकी को भारत बायोटेक को हस्तांतरित करने के लिए उन्हें बधाई दी। उन्होंने कहा कि भारत बायोटेक ने इस नवाचार को देश के जन सामान्य तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। डॉ कटोच ने कहा कि अब हम कई अन्य लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समर्थ हैं।

भारत बायोटेक के प्रबंध निदेशक ने माननीय मंत्री महोदय, स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव और आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच, पुणे स्थित राष्ट्रीय विषाणुविज्ञान संस्थान के निदेशक डॉ मौर्य, इस वैक्सीन के शोधकार्य से जुड़े डॉ गोरे को प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के उपरान्त इस कार्यक्रम का समापन हुआ।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह : शपथ ग्रहण

'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' के अंतर्गत आई सी एम आर मुख्यालय में दिनांक 28 अक्टूबर, 2013 को भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग के सचिव और आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध आई सी एम आर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शपथ दिलाई।

महानिदेशक महोदय ने आई सी एम आर के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे अपना कार्य निष्ठापूर्वक और निर्धारित समय सीमा के भीतर करें। क्योंकि, निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप कार्य पूरा नहीं होना भ्रष्टाचार का ही स्वरूप होता है। इस शपथ ग्रहण कार्यक्रम में आई सी एम आर की वरिष्ठ वित्तीय सलाहकार श्रीमती धरित्री पण्डा, वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) श्री टी.एस. जवाहर के साथ-साथ आई सी एम आर के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया।

शपथ दिलाते हुए स्वास्थ्य एवं अनुसंधान विभाग के सचिव एवं आई सी एम आर के महानिदेशक डॉ विश्व मोहन कटोच

व्याख्यान : बदलते विश्व में अवसाद की चुनौतियां

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद मुख्यालय में दिनांक 29 अक्टूबर, 2013 को नई दिल्ली स्थित मूलचन्द अस्पताल के मनश्चिकित्सा विभाग के वरिष्ठ सलाहकार डॉ जीतेन्द्र नागपाल द्वारा ***'बदलते विश्व में अवसाद की चुनौतियां'*** विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। आई सी एम आर के वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) श्री टी.एस. जवाहर ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के वैज्ञानिक 'ई' डॉ कृष्णानन्द पाण्डेय ने वक्ता, अध्यक्ष के साथ-साथ सम्मेलन कक्ष में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया। प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग के प्रमुख डॉ विजय कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि इस व्याख्यान का आयोजन आई सी एम आर मुख्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने की श्रृंखला में एक कड़ी है। डॉ श्रीवास्तव ने वक्ता डॉ जीतेन्द्र नागपाल का परिचय दिया। अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में श्री जवाहर महोदय ने बताया कि व्याख्यान का यह विषय बहुत प्रासंगिक है क्योंकि आज हमारे व्यस्त जीवन में कहीं न कही अवसाद अपना प्रभाव छोड़ता है। उन्होंने आई सी एम आर मुख्यालय में अवसाद विषय पर व्याख्यान देने के लिए पधारे डॉ नागपाल के प्रति आभार व्यक्त किया।

सम्बोधित करते हुए आई सी एम आर के वरिष्ठ उपमहानिदेशक (प्रशासन) श्री टी. एस. जवाहर

डॉ नागपाल ने अवसाद के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि "हमारे समाज में अवसाद से प्रभावित होने वालों में युवा वर्ग, वृद्ध और महिलाओं की संख्या बहुत अधिक है। अवसाद से बचने के

व्याख्यान देते हुए डॉ जीतेंद्र नागपाल

सम्मेलन कक्ष में उपस्थित श्रोतागण

लिए आत्म सम्मान देना बहुत जरूरी है। आज टीनेजर्स (तेरह वर्ष से अधिक आयु के बच्चे और युवाओं) में अवसाद की उपस्थिति काफी पाई जाती है, उनमें धूम्रपान, मद्यपान, मादक औषधियों के व्यसन की लत लग जाती है जिनकी शुरुआत के पीछे अवसाद का ही हाथ होता है। समाज में वृद्धों की स्थिति बहुत दयनीय है, उनसे संवाद स्थापित करने

के लिए किसी के पास समय नहीं है। युवाओं और वृद्धों को अवसाद से बचाने के लिए समुदाय की प्रौढ़ आबादी की एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। इस वर्ग को धैर्य (पेशेंस), सहनशक्ति (टॉलरेंस) और संवाद (कम्युनीकेशन) की प्रक्रिया पर जोर देने की आवश्यकता है। परिवार के सभी सदस्यों को एक ऐसी जीवन शैली अपनानी चाहिए जो स्वास्थ्य के लिए सर्वथा अनुकूल हो। डॉ नागपाल ने बताया कि अवसाद की स्थिति पोषण से भी संबद्ध है। शहरी किशोरों में अरक्तता (एनीमिया) की उपस्थिति 50 प्रतिशत से अधिक है, उनमें लौह अल्पता की स्थिति होती है, परन्तु उनका इलाज संबद्ध समस्याओं के लिए नहीं बल्कि अवसाद का इलाज कराया जाता है। महिलाओं और बच्चों को सशक्त बनाने की आवश्यकता है। घर-परिवारों में लिंग-भेद और हिंसा की प्रवृत्ति अवसाद को जन्म देती है, अतः, अवसाद की स्थिति से बचने के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और स्वच्छता जैसी महत्वपूर्ण स्थितियों पर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। पारिवारिक रिश्तों और मूल्यों को भी सुदृढ़ बनाना आवश्यक है।" डॉ नागपाल ने अवसाद से संबद्ध अनेक स्थितियों की चर्चा की और उनसे बचने के उपाय सुझाए। अंत में डॉ रजनी कान्त, वैज्ञानिक 'ई' के औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के समाचार

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आई सी एम आर) के विभिन्न तकनीकी दलों/समितियों की नई दिल्ली में संपन्न बैठकें

बालकालीन चोटों पर कॉल फॉर प्रोपोज़ल्स पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	16 सितम्बर, 2013
स्वास्थ्य मंत्रालय की जांच समिति की बैठक	16 सितम्बर, 2013
विभिन्न राज्यों में मॉडेल ग्रामीण स्वास्थ्य अनुसंधान इकाइयों तथा संक्रामक रोग प्रयोगशालाओं के नेटवर्क की स्थापना के कार्यान्वयन हेतु अनुमोदन समिति की बैठक	16 सितम्बर, 2013
चिरकारी वृक्क रोग परियोजना पर अन्वेषक एवं परामर्शक की तथा प्रशिक्षण कार्यशाला पर बैठक	17 सितम्बर, 2013
भारत में सीलियक रोग के निदान और प्रबंधन पर दिशानिर्देश के विकास नामक टास्क फोर्स परियोजना पर बैठक	17 सितम्बर, 2013
एम्फोमुल पर द्वितीय विशेषज्ञ दल की बैठक	17 सितम्बर, 2013
चन्द्रपुर में आई सी एम आर केन्द्र की स्थापना पर विशेषज्ञ दल की बैठक	17 सितम्बर, 2013
5 वर्ष के आंकड़ों पर आधारित भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान संसूचकों हेतु एक पाइलट अध्ययन पर NSTMIS (डी एस टी) प्रायोजित परियोजना पर स्थानीय परियोजना सलाहकार समिति की तृतीय बैठक	19 सितम्बर, 2013
स्वरयंत्र कैंसर पर उपसमिति की बैठक	20 सितम्बर, 2013
बहु माइलोमा पर उपसमिति की बैठक	20 सितम्बर, 2013
आपातकालीन गर्भनिरोध से संबद्ध परियोजनाओं पर परियोजना पुनरीक्षण दल की बैठक	23 सितम्बर, 2013
ट्रामा (आघात) पर परियोजना पुनरीक्षण समिति की बैठक	23 सितम्बर, 2013
मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सहयोगी अनुसंधान पर DHR/ICMR/DBT संयुक्त कार्यकारी दल की प्रथम बैठक	26 सितम्बर, 2013
सहयोगी अनुसंधान समझौता पर बैठक	27 सितम्बर, 2013
मिथाइल ग्लायोक्ज़ॉल और अविषाक्त कैंसर रोधी औषध के रूप में इसके योज्यों पर विशेषज्ञ दल की बैठक	27 सितम्बर, 2013
तंत्रिका पेशीय विकार, रजिस्ट्री और पेशी बैंक हेतु उन्नत अनुसंधान केन्द्र के लिए परियोजना पर चर्चा करने की बैठक	1 अक्टूबर, 2013
प्राकृतिक उत्पाद कंशोर्शियम पर उपसमिति की बैठक	3 अक्टूबर, 2013
सामाजिक-व्यावहारिक अनुसंधान पर उपसमिति की बैठक	8 अक्टूबर, 2013
बंगलोर स्थित राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिकाविज्ञान संस्थान में प्रस्तावित उन्नत अनुसंधान केन्द्र की स्थापना पर बैठक	9 अक्टूबर, 2013
रोगवाहक जन्य रोग विज्ञान फोरम के अंतर्गत डेंगी, चिकनगुनया और जापानी मस्तिष्कशोथ पर विचारोत्तेजक बैठक	10 अक्टूबर, 2013
पान मसाला के प्रयोग के साथ मुखीय कैंसर-पूर्व स्थितियों की संबद्धता पर अध्ययन पर विशेषज्ञ दल की बैठक	10 अक्टूबर, 2013
अतिरक्तदाब पर टास्क फोर्स की बैठक	11 अक्टूबर, 2013

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वित्तीय सहायता से सम्पन्न संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन

संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
फार्मेकोइकोनॉमिक्स और परिणाम शोध पर द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	9-10 अक्टूबर, 2013 नई दिल्ली	प्रो.एस.के गुप्ता प्रोफेसर इमेरिटस एवं अध्यक्ष क्लीनिकल अनुसंधान विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय साउथ कैम्पस नई दिल्ली
हर्बल औषध का दृश्य : संभावनाएं और चुनौतयों पर सेमिनार	9-10 अक्टूबर, 2013 सागर	प्रो. विनोद कुमार दीक्षित आचार्य एवं अध्यक्ष भाग्योदय तीर्थ फार्मेसी कॉलेज सागर
घाव सुरक्षा एवं अनुसंधान संस्था का द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय और 7वां वार्षिक सम्मेलन	11-13 अक्टूबर, 2013 पुडुचेरी	डॉ डी.पी. मोहापात्रा सहायक आचार्य प्लास्टिक सर्जरी विभाग जवाहर लाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षण संस्थान पुडुचेरी
उन्नत पॉलीमेरिक सामग्री पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	11-13 अक्टूबर, 2013 कोट्टायम	डॉ नन्दाकुमार कलारिक्कल मैक्रोमॉलीकुलर साइंस एवं इंजीनियरिंग यूनिट महात्मा गांधी विश्वविद्यालय कोट्टायम
थीसिस/शोध पत्र लेखन : प्री-कांफ्रेंस एवं सी एम ई	17 अक्टूबर, 2013 हलद्वानी	डॉ सी.एम.एस. रावत आचार्य एवं अध्यक्ष सामुदायिक चिकित्साविज्ञान विभाग गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज हलद्वानी
14वां भारत-अमरीका फ्लो साइटोमीट्री कार्यशाला (क्लीनिकल)	18-20 अक्टूबर, 2013 गुड़गांव	डॉ विमर्श रैना निदेशक प्रयोगशाला सेवा एवं आधान मेडिसिन मेदान्ता, दि मेडीसिटी गुड़गांव
पादप सम्पदा और मानव कल्याण पर सम्मेलन	18-20 अक्टूबर, 2013 गोरखपुर	डॉ एन.एन. त्रिपाठी आचार्य वनस्पतिविज्ञान विभाग डी डी यू गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर
साउथ पेडीकॉन 2013 पर सम्मेलन तथा इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स का 32वां कर्नाटक राज्य वार्षिक सम्मेलन	18-20 अक्टूबर, 2013 बेलगांव	डॉ बाबन्ना हुक्केरी आयोजन सचिव पीडियाट्रिक्स विभाग जे.एन. मेडिकल कॉलेज बेलगांव
आयुर्विज्ञान चिकित्साविज्ञान में ट्रांसलेशनल अनुसंधान के स्कोप राष्ट्रीय सम्मेलन	19-20 अक्टूबर, 2013 वाराणसी	डॉ एन.एन. त्रिपाठी आचार्य वनस्पतिविज्ञान विभाग डी डी यू गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
साउथ पेडीकॉन 2013 पर सम्मेलन तथा इंडियन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स का 32वां कर्नाटक राज्य वार्षिक सम्मेलन	18-20 अक्टूबर, 2013 बेलगांव	डॉ बाबन्ना हुक्केरी आयोजन सचिव पीडियाट्रिक्स विभाग जे.एन.मेडिकल कॉलेज बेलगांव
तंत्रिकाविज्ञान में उभरती दिशाएं : आण्विक एवं कोशिकीय प्रयासों पर सेमिनार	19-23 अक्टूबर, 2013	प्रो. एम.के. ठाकुर आयोजन सचिव जन्तुविज्ञान विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
तुलनात्मक अंतःस्रावीविज्ञान और शरीरक्रियाविज्ञान पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	21-23 अक्टूबर, 2013 नागपुर	डॉ ए.जी. जाधव आचार्य जन्तुविज्ञान विभाग आर.टी.एम. नागपुर विश्वविद्यालय नागपुर
जैवप्रौद्योगिकी पर इंद्रप्रस्थ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	22-25 अक्टूबर, 2013 नई दिल्ली	प्रो.पी.सी. शर्मा डीन जैवप्रौद्योगिकी विभाग गुरु गोबिन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली
शोध विधिविज्ञान पर कार्यशाला	22-26 अक्टूबर, 2013 मदुरई	श्री सुनील जोसेफ प्रशिक्षण प्रभाग लायंस अरविन्द इंस्टीट्यूट ऑफ कम्यूनिटी ऑफ्थैल्मोलॉजी मदुरई
भारतीय आयुर्विज्ञान सांख्यिकी संस्था का 31वां वार्षिक सम्मेलन	23-26 अक्टूबर, 2013 वेल्लोर	डॉ बी.एंटनीसामी आचार्य एवं विभागाध्यक्ष जैवसांख्यिकी विभाग क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल वेल्लोर
विषविज्ञान संस्था की 33वीं वार्षिक बैठक एवं टॉक्सिकजीनोमिक प्रोद्योगिकी पर राष्ट्रीय संगोष्ठियां	23-25 अक्टूबर, 2013 मथुरा	प्रो. सतीश कुमार गर्ग डीन पं.दीनदयाल उपाध्याय पशु चिकित्साविज्ञान विश्वविद्यालय मथुरा
जूनोटिक आविर्भाव और संरक्षण चिकित्साविज्ञान पर सेमिनार	24-25 अक्टूबर, 2013 कन्याकुमारी	डॉ एस.प्रकाश आचार्य एवं अध्यक्ष जैवप्रौद्योगिकी विभाग उदया स्कूल ऑफ इंजीनियरिंग कन्याकुमारी
भारतीय न्युक्लियर हृद्‌विज्ञान संस्था का 9वां द्विवार्षिक सम्मेलन	25-27 अक्टूबर, 2013 चेन्नई	डॉ ई.प्रभू मेडिकल निदेशक उन्नत न्युक्लियर मेडिसिन अनुसंधान संस्थान चेन्नई

संगोष्ठियां/सेमिनार/कार्यशालाएं/पाठ्यक्रम/सम्मेलन	दिनांक एवं स्थान	सम्पर्क के लिए पता
नर्सेस मैनेजिंग डायबिटीज़ : एक सहयोगी प्रयास पर सेमिनार	25 अक्टूबर, 2013 कोइम्बटूर	प्रो. तमिल सेल्वी आयोजन सचिव पी.एस.जी.कॉलेज ऑफ नर्सिंग कोइम्बटूर
तंत्रिकाविज्ञान में उभरती दिशाओं और चुनौतियों पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी तथा इंडियन एकडेमी ऑफ न्युरोसाइंस का 31वां वार्षिक सम्मेलन	25-27 अक्टूबर, 2013 इलाहाबाद	प्रो.यू.सी. श्रीवास्तव आयोजन सचिव प्राणिविज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद
प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना : अस्पताल के आहार विभाग में नवीन FSSR 2011 के आहार स्वच्छता संबद्ध व्यवस्था के कार्यान्वयन पर सेमिनार	25 अक्टूबर, 2013 चण्डीगढ़	डॉ अमरजीत सिंह स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान अनुसंधान एवं शिक्षण संस्थान चण्डीगढ़
भारतीय मेडिकल सूक्ष्मजीवविज्ञानी संस्था, दिल्ली और एन सी आर चैप्टर का 5वां वार्षिक सम्मेलन	25-26 अक्टूबर, 2013 नई दिल्ली	डॉ बी.आर. मिर्धा आचार्य सूक्ष्मजीवविज्ञान विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
शल्यक्रिया सम्मेलन-2013	26-27 अक्टूबर, 2013 पुणे	कर्नल विपिन कुमार सह आचार्य शल्यक्रिया विभाग आर्म्ड फोर्सेज़ मेडिकल कॉलेज एवं कमाण्ड अस्पताल पुणे
पीडियाट्रिक एनीस्थीसिया पर सी एम ई	27 अक्टूबर, 2013 नई दिल्ली	डॉ डी.के. पवार आचार्य संज्ञाहरणविज्ञान विभाग अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान नई दिल्ली
14वीं इण्डो-यू एस फ्लो साइटोमीट्री कार्यशाला	28-30 अक्टूबर, 2013 चेन्नई	डॉ गणेश वेंकटरमण सह आचार्य मानव आनुवंशिकी विभाग श्री रामचन्द्र विश्वविद्यालय चेन्नई
कीट विविधता और सिस्टमैटिक्स : आण्विक प्रयासों पर विशेष बल पर राष्ट्रीय सम्मेलन	28-30 अक्टूबर, 2013 अलीगढ़	डॉ मोहम्मद कामिल उस्मानी सह आचार्य प्राणीविज्ञान विभाग अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन

		मूल्य (रु.)
1.	**न्युट्रीटिव वैल्यू ऑफ इंडियन फूड्स (1985)** लेखक : सी. गोपालन, बी.वी.रामशास्त्री एवं एस.सी.बालसुब्रमणियन; बी.एस.नरसिंग राव, वाई.जी.देवस्थले एवं के.सी.पन्त द्वारा संशोधित एवं अपडेटेड (1989) पुनर्मुद्रण - (2007, 2011)	60.00
2.	**लो कॉस्ट न्युट्रीशियस सप्लीमेंट्स** लेखक : सी. गोपालन बी.वी.रामशास्त्री, एस.सी.बालसुब्रामणियन, एम.सी.स्वामीनाथन (द्वितीय संस्करण 1975, पुनर्मुद्रण - 2005-2011)	15.00
3.	**मेन्यूस फॉर लो कॉस्ट बैलेन्स्ड डाइट्स ऐण्ड स्कूल लंच प्रोग्रेम्स (सुटेबल फॉर नार्थ इंडिया)** लेखक : एस.जी.श्रीकंटिया, सी.जी.पंडित (द्वितीय संस्करण 1977, पुनर्मुद्रण 2004)	10.00
4.	**मेन्यूस फॉर लो कॉस्ट बैलेन्स्ड डाइट्स ऐण्ड स्कूल लंच प्रोग्रेम्स (सुटेबल फॉर साउथ इंडिया)** लेखक : एम.मोहन राम, सी. गोपालन (चतुर्थ संस्करण 1996, पुनर्मुद्रण 2002)	8.00
5.	**सम कॉमन इंडियन रेसिपीज़ ऐण्ड देयर न्युट्रीटिव वैल्यू** लेखक : स्वर्ण पसरीचा एवं एल.एम.रिबेलो (चतुर्थ संस्करण 1977, पुनर्मुद्रण 2006, 2011)	50.00
6.	**न्युट्रीशन फॉर मदर ऐण्ड चाइल्ड** लेखक : पी.एस. वेंकटाचलम् तथा एल.एम.रिबेलो (पंचम संस्करण 2002, पुनर्मुद्रण 2004, 2011)	35.00
7.	**सम थिरैप्यूटिक डाइट्स** लेखक : स्वर्ण पसरीचा (पंचम संस्करण 1996,पुनर्मुद्रण 2004, 2011)	15.00
8.	**न्युट्रिएन्ट रिक्वायरमेण्ट्स ऐण्ड रिकमेंडेड डाइटरी अलाउंसेज़ फॉर इंडियंस** लेखक : बी.एस.नरसिंगा राव, बी. शिवकुमार (प्रथम संस्करण 1990, पुनर्मुद्रण 2008)	85.00
9.	**फ्रूट्स** लेखक : इंदिरा गोपालन तथा एम.मोहन राम (द्वितीय संस्करण 1996, पुनर्मुद्रण 2004, 2011)	35.00
10.	**काउंट व्हाट यू ईट** लेखक : स्वर्ण पसरीचा (1989, पुनर्मुद्रण 2000)	25.00
11.	**डाइट ऐण्ड डायबिटीज़** लेखक : टी.सी.रघुराम, स्वर्ण पसरीचा तथा आर.डी.शर्मा (तृतीय संस्करण 2012)	50.00

12.	**डाइट ऐण्ड हार्ट डिसीज़** लेखक : गफूरुन्निसा तथा कमला कृष्णस्वामी (प्रथम संस्करण 1994, पुनर्मुद्रण 2004)	30.00
13.	**डाइटरी टिप्स फॉर दि एल्डरली** लेखक : स्वर्ण पसरीचा तथा बी.वी.एस.थिमायम्मा (प्रथम संस्करण 1992, पुनर्मुद्रण 2005, 2010)	15.00
14.	**डाइटरी गाइडलाइन्स फॉर इंडियंस-ए मैनुअल** लेखक : कमला कृष्णास्वामी, बी. सेसीकरण (द्वितीय संस्करण 2011)	110.00
15.	**डाइटरी गाइडलाइन्स फॉर इंडियंस** लेखक : कमला कृष्णास्वामी, बी. सेसीकरण (प्रथम संस्करण 1998, पुनर्मुद्रण 1999, 2009)	15.00
16.	**ए मैनुअल ऑफ लेबोरेटरी टेकनीक्स** लेखक : एन. रघुरामुलु, के.माधवन नायर तथा एस.कल्याणसुन्दरम् (द्वितीय संस्करण, 2003)	110.00
17.	**फल** राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित 'फ्रूट्स' का हिन्दी रूपान्तरण अनुवाद : अंजू शर्मा एवं कृष्णानन्द पाण्डेय (प्रथम संस्करण 1997, पुनर्मुद्रण, 2001, 2012)	25.00
18.	**भारतीयों के लिए आहार संबंधी मार्गदर्शिका** (प्रथम संस्करण 1998, पुनर्मुद्रण 1999, 2001, 2012)	10.00
19.	**अपने आहार को जानें** राष्ट्रीय पोषण संस्थान, हैदराबाद द्वारा प्रकाशित 'काउंट ह्वाट यू ईट' का हिन्दी रूपान्तरण अनुवाद : कृष्णानन्द पाण्डेय (प्रथम संस्करण 1997, पुनर्मुद्रण 2012)	35.00

उपरोक्त प्रकाशन प्राप्त करने के लिए महानिदेशक, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के नाम से डिमाण्ड ड्राफ्ट अथवा चेक भेजें। बैंक कमीशन तथा डाक व्यय अलग होगा। मनीऑर्डर/पोस्टल ऑर्डर स्वीकार नहीं किए जाएंगे। इस संबंध में और अधिक जानकारी के लिए प्रमुख, प्रकाशन एवं सूचना प्रभाग, भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद, पोस्ट बॉक्स 4911, अंसारी नगर, नई दिल्ली - 110029 से सम्पर्क करें।
दूरभाष : 91-11-26588895, 91-11-26588980, 91-11-26589794, 91-11-26589336, 91-11-26588707, (एक्स्टेंशन-228), फैक्स : 91-11-26588662, ई-मेल : headquarters@icmr.org.in, icmrhqds@sansad.nic.in
सम्पर्क व्यक्ति : डॉ रजनी कान्त, वैज्ञानिक 'ई'
ई- मेल : kantr 2001@yahoo.co.in

तकनीकी सहयोग : श्रीमती वीना जुनेजा

आई सी एम आर पत्रिका भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद की वेबसाइट www.icmr.nic.in पर भी उपलब्ध है

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद्

सेमिनार/संगोष्ठियां/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए परिषद द्वारा आंशिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, वित्तीय सहायता के लिए निर्धारित प्रपत्र पर पूर्णतया भरे हुए केवल उन्हीं आवेदन पत्रों पर विचार किया जाएगा जो सेमिनार/संगोष्ठी/कार्यशाला आदि के आरम्भ होने की तारीख से कम से कम चार महीने पूर्व भेजे जाएंगे।

भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद के लिए मैसर्स रॉयल ऑफसेट प्रिन्टर्स,
ए–89/1, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 028 से मुद्रित। पं. सं. 47196/87